21MAY SUNDAY 2-4.qxd 5/19/2017 6:52 PM Page 1

नज़्म

कितने संगदिल हैं लोग, एहसास समझते ही नहीं
पूजा करते हैं बुतों की,
इंसां को मगर, इंसां समझते ही नहीं।
तोली जाए औकात-ए-आदम,
चंद सिक्कों की बनिस्बत
कोई कीमत न उसूलों की,
समझते ही नहीं।
कैद करके आसमां मुठ्ठी में,
हक जताएं पानियों पर
नेमत-ए-ख़ुदा है, ये आब-ओ-हवा
समझते ही नहीं।
उजाड़ देते हैं कितने घरौंदे,
इक घर बनाने को अपना,
कितने बेदर्द हैं, दर्द परिंदों का,
समझते ही नहीं।
घर जलाकर औरों का,
करते हैं चिराग रोशन अपना
ख़ुद को कहते हैं मसीहा, क्या मुफलिसी,
समझते ही नहीं।
पाला करते हैं रंजिशें दिल में,
खंजर आस्तीनों में
खून-खराबे पे उतारू, बात अमन-ओ-चैन की,
समझते ही नहीं।

-दीपिका अरोड़ा

तुम ही तो हो

हर पल याद तुम्हारी आती है,
दिल को यह समझाती है,
कि तुम मेरे थे, मेरे सिवा किसी के नहीं।
मेरे ही रहोगे, है यह पूरा यकीं।
फिर भी दिल डरता है ज़माने की क्रूर निगाहों से,
कैसे बचाए रखूंगा तुमको।
आखिर इन्सान हूं मैं भी,
डर जाता हूं,
कहीं खो न बैठूं जो,
जीवन का एक सहारा है,
वह तुम ही तो हो।

-बृज मल्ही
मो. 9888902448

चाल दुश्मन की समझो

भारत मां की रक्षा
हैं करते वीर जवान
सोचो गहराई से
कितने उनके एहसान।
संयम परखने की
कभी न करना भूल
चाहें गर तो पल में
चटा सकते तुम्हें धूल।
शौक है पत्थरबाज़ी का
तो दुश्मन पर बरसाओ
जो उकसाता है तुम्हें
ज़रा सबक उसे सिखाओ।
किसी लालच में आकर
न गलत कदम उठाओ
नमक हलाल बनो तुम
खौफ खुदा का खाओ।
अपने सुंदर हाथों को
सेवा-इबादत में लगाओ
फूल हो तुम भारत के
'विग' पुण्य से उसे महकाओ।

-मुकेश विग

शिखरिनी छंद

मानव धर्म
जिओ और जीने दो
सिखाता मर्म
किशोर तन
सब कुछ जानना
सजग मन
कवि गुंजन
चलायमान रहे
करो मंथन
रहो चेतन
विरोधी आ ना जाए
खोलो नयन
प्रभु शरण
सब मिल जायेगा
दुख हरण
करो अर्पण
झूठ नहीं बोलता
मेरा दर्पण
देश अमन
शहीद हुआ फौजी
करो नमन:

-आरती लोहनी

मन महोत्सव

न जाने कितने गड्ढे
खुदे पड़े हैं चारों ओर
आओ इन गड्ढों को पाटें
जीवन को हमवार बनाएं
पर इनको भरने से पहले
मन-मिट्टी में कुछ उपयोगी
छोटे-मोटे बीज दबाएं
मन-बगिया की हर क्यारी में
सकारात्मक भावों की
कोमल कलमें रोपें दृढ़ विश्वास के
उत्तम जल से आप्लावित कर
एक और उपयोगी वन-महोत्सव
मन-महोत्सव भी मनाएं।

-सीताराम गुप्ता
मो. 09555622323

आवश्यक सूचना

लोकप्रिय हिन्दी दैनिक 'अजीत समाचार' के रविवारीय संस्करण एवं अन्य परिशिष्टों हेतु रचनाएं भेजने वाले साहित्यकारों/लेखकों से अनुरोध है कि रचनाएं भेजते समय, रचना की मूल प्रति अपने पास अवश्य सुरक्षित रखें। रचनाओं के भारी संख्या में निरन्तर प्राप्त होते रहने से अप्रकाशित रह जाने वाली रचनाएं लेखकों को लौटा पाना कदापि संभव नहीं है। आशा है, 'अजीत समाचार' के लेखक बन्धु इस सम्पादकीय विवशता को भली प्रकार समझ सकेंगे।

— मुख्य सम्पादक

कहानी

राजेश गुप्ता

सपने वाला फरिश्ता

ठिगने कद से दुनिया कुछ बड़ी ही दिखने लगी थी उसे आज। यह उसकी आखों का भ्रम था या फिर यह वाक्या बड़ी थी उसे कुछ समझ नहीं आ रहा था। रह-रह कर वह इसी बात से मायूस होने लगा था और कभी-कभी वह हीनता के गहरे समुद्र में अपने-आप को डूबा हुआ-सा महसूस करता। उसके सभी दोस्त बड़े कद-काठ वाले थे, सब उसे उसके कद की वजह से सताते रहते और बौने के नाम से पुकारते। यह नाम जैसे उसकी विरासत-सा बन गया था। उसे इस नाम से नफरत-सी हो गई थी मगर यह नाम उसका पीछा नहीं छोड़ रहा था, हर कोई उसे इस नाम से पुकारता। वह इस नाम को अनसुना करने का भरसक प्रयास करता। कई बार तो उसका मन करता कि वह उसे इस नाम से पुकारने वालों के मुंह पर थप्पड़ जड़ दे मगर क्या करे उसका हाथ तो उसके गले तक पहुंच ही न पाता था।

> कभी-कभी वह सोचता कि अगर कोई फरिश्ता सपने में आकर उसका कद लम्बा कर सकता है तो फिर असलियत में ऐसा क्यों नहीं हो सकता। हर समय उसकी निगाहें किसी चमत्कारी फरिश्ते के इंतजार में इधर-उधर भटकती रहतीं। वह बड़ी उत्सुकता से मन ही मन में भगवान से उसी फरिश्ते को भेजने की फरियाद करता रहता।

22 वर्ष की आयु के बावजूद भी अपनी उम्र के लड़कों के साथ न खेल पाता मजबूरन उसे छोटे बच्चों के साथ खेलना पड़ता। छोटे बच्चे उसे थोड़ी-बहुत इज्जत देते मगर बौना भैया कहने से न रह पाते। दुख तो उसे सिर्फ यही था कि यह नाम (बौना) उसका पीछा नहीं छोड़ पा रहा था। कई बार उसका मन करता कि वह किसी पाइप से लटके जिससे उसका कद बड़ा हो जाए मगर वह पाइप से लटके कैसे वह तो बड़ा ऊंचा होता है। यह सोचकर उसका मन टूट जाता। मगर उसको कभी-कभी अच्छा लगता, जब वह सपने से जागता, उसे सपने में अपना कद बड़ा हुआ दिखाई देता। उसे लगता कि किसी फरिश्ते ने उसको पकड़ कर लम्बा कर दिया है तो वह बड़ी खुशी से उठता उसे लगता कि उसका कद वाक्या ही लम्बा हो गया है लेकिन जब उसे उठने के बाद होश आता तो उतना ही कद पाकर वह फिर मायूसी के गड्डे में गिर जाता।

कभी-कभी वह सोचता कि अगर कोई फरिश्ता सपने में आकर उसका कद लम्बा कर सकता है तो फिर असलियत में ऐसा क्यों नहीं हो सकता। हर समय उसकी निगाहें किसी चमत्कारी फरिश्ते के इंतजार में इधर-उधर भटकती रहतीं। वह बड़ी उत्सुकता से मन ही मन में भगवान से उसी फरिश्ते को भेजने की फरियाद करता रहता। कभी-कभी उसे लगता कि सिर्फ वह ही इस दुनिया में बौना व्यक्ति है मगर तब उसे बड़ी राहत महसूस होती जब वह किसी दूसरे बौने व्यक्ति को देखता। उसका मन कभी भी उसके साथ दोस्ती का नहीं होता उसका मन करता कि वह उसे बौना कहे और अपने मन की भड़ास निकाले जैसे सारा ज़माना उसे बौना कह कर चिड़ाता है। इसी तरह वह सिर्फ मन ही मन में उसे हज़ारों बार बौना कहकर अपने मन को शांत कर लेता। मगर वह क्या करे इस बात से उसका कद तो नहीं बढ़ेगा यह सोचकर चुप रह जाता। खूबसूरत लड़कियां उसे बड़ी अच्छी लगती थीं उसका मन करता कि वह उनकी तरफ देखता ही रहे मगर वह मुंह से कुछ भी न बोल पाता।

'अरे बौना आदमी' सब की तरह वह लड़कियां भी यह कहकर हंस देतीं और उसे मायूस कर देतीं जैसे वह कोई अजूबा हो। इसी बात के कारण उसने घर से निकलना कम कर दिया था। सिर्फ एक मां ही थी जो उसे बिल्लू के नाम से पुकारती। एक दिन उसकी मां ने उसे व्रत की पूजा के लिए बाज़ार से गन्ना लाने के लिए भेजा। जब वह गन्ना लेकर आया तो उसे गन्ने की किस्मत पर बड़ा गुस्सा आया क्योंकि गन्ना उससे बहुत बड़ा था उसे लगा कि ईश्वर ने गन्ना इतना लम्बा बना दिया या मेरा कद भी उसने गन्ने को दे दिया है। कभी-कभी उसे किसी लम्बे व्यक्ति या किसी लम्बी चीज को देख कर बड़ा गुस्सा आ जाता। उसे लगता जैसे ईश्वर ने उसका कद उसको दे दिया हो। **(शेष अगले रविवारीय अंक में)**

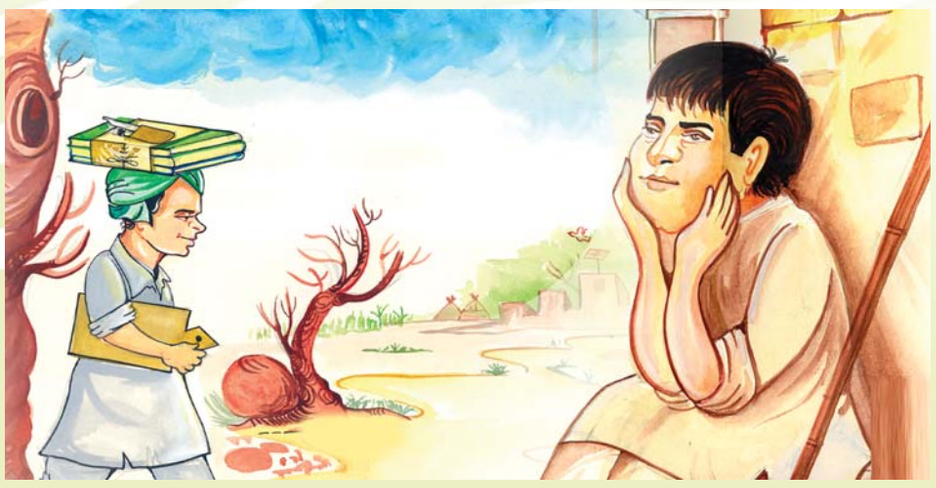

-सामने स्टेट बैंक ऑफ इंडिया
गुरदासपुर (पंजाब)
मो. 09815035214

व्यंग्य

प्रेमस्वरूप गंगवार

पानी बचा के रखना

गर्मी आ गई। इधर सूर्य भगवान ने अपना रौद्र रूप दिखाना शुरू किया, उधर बिजली और पानी को लेकर हाय तौबा मचनी शुरू हो गई। अगर बिजली की कमी को एक बार के लिए हम नज़रअंदाज़ कर भी दें, लेकिन पानी के साथ तो ऐसा नामुमकिन है।

जल जीवन है। कहने को यह सृष्टि के पांच बेसिक तत्वों में शामिल है। इस कारण इसे प्राकृतिक संपदा भी कहा जाता है। फिर भी आज हम जल को पूर्णतया प्राकृतिक नहीं कह सकते, क्योंकि आज पानी कुछ धन्ना सेठों की निजी जागीर भी है। दुकान पर जो बोतल बंद पानी मिलता है वो इसी श्रेणी में आता है।

वो ज़माना और रहा होगा जब दानी धर्मी लोग रास्ते में कुएं बनवाया करते थे ताकि राहगीर अपनी प्यास बुझा सकें। इस परमार्थ कार्य से उन्हें असीम पुण्य मिला होगा। हो सकता है कि उनकी परोपकारी भावना से प्रसन्न होकर जल देवता ने उन्हें इस जन्म में बहुराष्ट्रीय कम्पनियों का मालिक बना दिया हो ताकि वे उस पुण्य का आना पाई वसूल कर लें और इसी से धरती पर पानी की कमी हुई हो ताकि जब पानी कहीं दिखेगा नहीं तो लोग दुकान से पानी की बोतल खरीदने को मजबूर हो जाएंगे क्योंकि ज़िंदा रहना है तो प्यास बुझानी ही होगी।

इसी किल्लत के चलते अगला विश्व युद्ध पानी के लिए लड़े जाने की भविष्यवाणी हो चुकी है और शुरुआत तो हो भी चुकी है क्योंकि राज्य से राज्य और देश से देश के मध्य पानी को लेकर टकराने के समाचार तो आज भी आ रहे हैं लेकिन पानी के लिए विश्व युद्ध तो बहुत बाद में होगा बल्कि बहुत कुछ तो उससे पहले भी होगा जिसकी तस्वीर उभरनी शुरू हो गई है।

वैसे पानी की कमी ऐसे ही बनी रही तो पता है क्या होगा। तब सारी व्यवस्था ही जल आधारित होगी। आज जहां रुपयों-गहनों की चोरी की जाती है, तब चोर पानी चुराया करेंगे। अखबार के पहले पन्ने पर समाचार होगा। बीती रात चोरों ने राम लखन पानी वाले के घर से पचास लीटर पानी उड़ाया। सुरक्षा के लिए पानी के बैंक खुलेंगे जहां कड़ी सुरक्षा व्यवस्था के बीच पानी का लेन-देन होगा। एक देश से दूसरे देश में पानी की तस्करी होगी, ठीक वैसे ही जैसे आज परमाणु तकनीक की होती है। नदी, झील, तालाब, बावड़ी आदि पर सशस्त्र सेनाओं के पहरे होंगे। जैसे आज तेल उत्पादक देशों पर हमले हो रहे हैं, ठीक वैसे ही जल सम्पन्न देशों पर दुनिया के ताकतवर देशों की गिद्ध दृष्टि लगी रहेगी।

तब पानी बोतलों की जगह इंजेक्शनों में मिला करेगा। बड़े-बड़े माफिया तब लोगों को किडनैप करके उनके शरीर से पानी खींच लिया करेंगे। ठीक वैसे, जैसे आजकल रक्त निकाल लेते हैं। शरीर में पानी की कमी होने पर अस्पताल वाले उसके परिजनों से वाटर बैंक से पानी लाने को बोलेंगे। रक्तदान की तरह पानी दान में लोग पुण्य और पैसा कमाया करेंगे। समाज में पानी स्टेटस का पैमाना होगा। जैसे आज फोर्ब्स में दुनिया के धनकुबेरों की सूची जारी होती है वैसे पानी कुबेरों के नाम छपा करेंगे।

नेता वोट के बदले वोटरों को पानी दिया करेंगे। बाबू रिश्वत में नोटों की जगह पानी मांगा करेंगे। लड़के वाले दहेज में फ्रिज, टी.वी., कार की जगह पानी मांगा करेंगे। सजनी अपने सजना को सम्बोधित करके गाया करेगी पानी बचा के रखना और सजना सजनी से ताउम्र साथ निभाने की जगह ताउम्र पानी पिलाने का वादा किया करेगा।

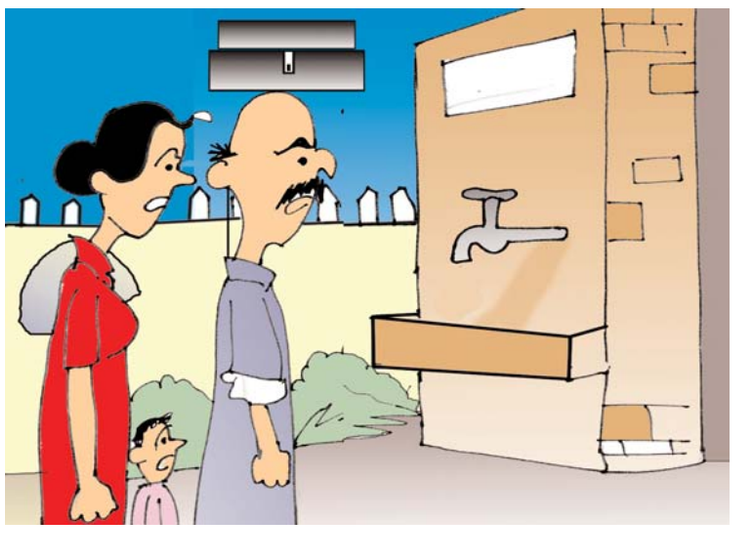

साहित्य में भी व्यापक फेर बदल हो जाएगा। 'तब काटो तो खून नहीं' की जगह काटो तो पानी नहीं, जैसे मुहावरे अस्तित्व में आएंगे। आदमी के रूतबे और इज्जत का पैमाना पानी होगा। तब इस तरह के समाचार आएंगे कि विगत एक महीने में श्याम लाल की इज्जत में दस लीटर का इजाफा हुआ। (अदिति)

प्रेरक प्रसंग

संयम का भ्रम

मगध सम्राट पुष्यमित्र अपने काल के सबसे प्रतापी सेनानायक भी थे। वैदिक रीतियों में उनकी अगाध आस्था थी। उनके अनुपालन में वह कभी चूक नहीं करते थे। एक बार की बात है कि वह अश्वमेध यज्ञ कर रहे थे। प्रात: काल सम्राट पुष्यमित्र के अश्वमेध की पूर्णाहुति हो चुकी थी। लोग और संत अपने-अपने डेरों पर जा चुके थे। रात को अतिथियों के सत्कार में राज-रंगशाला में नृत्योत्सव था। जब यज्ञ के ब्रह्मा महर्षि पतंजलि भी नृत्य-संगीत का आनंद लेने के लिए उपस्थित हुए, तो उनके शिष्य चैत्र के मन में गुरु के व्यवहार के औचित्य के विषय में शंकाशूल चुभ गया। बस, फिर क्या था। उसका मन विद्या अध्ययन से एकदम उचट गया। उस दिन से उसका मन महाभाष्य और योगसूत्रों के अध्ययन में नहीं रमा। अंत में एक दिन जब महर्षि चित्तवृत्ति-निरोध के साधनों पर प्रवचन कर रहे थे, तो चैत्र ने प्रासंगिक प्रश्न किया, 'भगवन्! क्या नृत्य-गीत और रास-रंग भी चित्तवृत्ति-निरोध में सहायक हैं?'

पारदर्शी पतंजलि मुस्कराए और बोले, 'वत्स! वास्तव में तुम्हारा प्रश्न तो यह है कि क्या उस रात मेरा सम्राट के नृत्योत्सव में सम्मिलित होना संयम-व्रत के विरुद्ध नहीं था? संयम के सच्चे अर्थ को तुम नहीं समझे। सुनो, आत्मा का स्वरूप है 'रस'-'रसो वै स:'। उस रस को परिशुद्ध और अविकृत रखना ही संयम है। विकृति की आशंका से रस-विमुख होना ऐसा ही है, जैसे कोई गृहिणी भिखारियों के भय से घर में भोजन पकाना बंद कर दे अथवा कोई कृषक भेड़-बकरियों के भय से खेती करना छोड़ दे। यह संयम नहीं, पलायन है। आत्मघात का दूसरा रूप है। आत्मा को रस-वर्जित बनाने का प्रयत्न ऐसा ही भ्रमपूर्ण है, जैसे जल को तरलता से अथवा अग्नि को ऊष्मा से विमुक्त करने का प्रयास। अतएव इस भ्रम में कभी न फंसो।' इतना सुनकर चैत्र का मन शांत हो गया और वह गुरु का आशय समझ गया।

-धर्मपाल डोगरा, 'मिन्टू'

लघु कथाएं

बांझ

शैली हृदय से अखिल को बेपनाह प्यार करती थी, लेकिन उसके माता-पिता ने उसे बांझ कहकर उसे घर से निकाल दिया था। मजबूर शैली अपने माता-पिता के घर में रहकर भी स्वयं को कैद में महसूस कर रही थी।

और उस दिन...।

अखिल के पिता उसके घर पर वकील को लेकर आ पहुंचे। उनके हाथ में तलाक के पेपर थे। वकील दलील दे रहा था-'अखिल के सूर्यवंशी परिवार की बेल आगे बढ़े-इसके लिए तुम्हें उसका दामन छोड़ना होगा...तुम्हें तलाक के पेपर पर साईन करने होंगे...।'

शैली इस आघात से पूरी तरह तिलमिला उठी। उसने स्पष्ट इंकार कर दिया। 'मैं तलाक के पेपर्स पर साईन नहीं करुंगी!'

शैली के वृद्ध माता-पिता करुण निवेदन कर रहे थे। अखिल के पिता ने जबर्दस्ती शैली के हाथ में पेन थमा दिया और बोले-'नालायक!...बदतमीज!!...देखता हूं...तू कैसे साईन नहीं करेगी।'

वकील तलाक के पेपर पर साईन करने के लिए शैली पर दबाव बना रहा था।

शायद शैली का करुण चीत्कार घर की दीवारें लांघकर ईश्वर के कानों तक पहुंच गया था।

घर में अचानक अखिल ने कदम रखे। उसने यह नारकीय दृश्य देखा तो उसकी आंखें फटी की फटी रह गयीं। मेरे पिता क्या इतने निर्मम और क्रूर हो सकते हैं ? यह देखकर वह हैरान था।

अखिल ने आगे बढ़कर वकील के हाथ से तलाक के पेपर छीन लिये और क्रोध में उन्हें फाड़कर उसके मुंह पर मार दिये।

वह शैली को लेकर घर से बाहर जा रहा था। उसके होठों पर यही शब्द गूंज रहे थे कि 'संतान के लिए मैं शैली की बलि नहीं चढ़ा सकता। वह मेरी थी और मेरी ही रहेगी। (सुमन सागर)

-डॉ. राम बहादुर 'व्यथित'

न्याय

तलाक... तलाक... तलाक...

अरशद की एक साल पहले नाजिया से शादी हुई थी। शादी के बाद वह विदेश चला गया और आज अचानक उसने मोबाइल पर तलाक दे दिया।

नाजिया ने यह बात सास ससुर को बताई, तो वे बोले, 'तलाक दे दिया है तो हमारा कोई रिश्ता नहीं।'

और नाजिया मायके लौट आई। उसके अब्बा बेटी की बात सुनकर बोले, जायज़ है। हमारे धर्म में मर्द ऐसा कर सकता है।'

'यह कोई मजाक है। तीन बार तलाक बोला और रिश्ता खत्म। जब निकाह से पहले औरत से उसकी मर्जी पूछी जाती है तो तलाक के समय क्यों नहीं? सलमा बोली, 'मैं बेटी को न्याय दिलाने के लिए कोर्ट में जाऊंगी।'

-किशनलाल शर्मा
मो. 9458740196

कंडक्टर

आज उसने इंटरव्यू पर जाना था। सही समय पर इंटरव्यू के स्थान पर पहुँचने के लिए उसने पहली बस पकड़ी थी। बस में बैठा हुआ वह सोच के समुद्र में गोते लगा रहा था कि कंडक्टर ने आकर उसका कन्धा थप थपा दिया। 'भाई साहब! कहां जाना है?'

'अमृतसर।'

उसने पचास का नोट कंडक्टर को देते हुए कहा।

'एक रूपया और।'

'ये लो इसमें से काट लो।' उसने अपने बटुये में से पांच रूपये का नोट कंडक्टर को देते हुए कहा।

'एक का छुट्टा दे।'

'छुट्टा तो है नहीं।'

'मैं फिर तुम्हे रेज़गी (चिलड़) कहां से लाकर दूँ।'

कंडक्टर ने रूखी सी आवाज़ में कहा और टिकट के पीछे बकाया लिख दिया।

'आप ने कहां जाना है।'

कंडक्टर ने आगे वाली सीट पर बैठी बोब कट लड़की से बीस का नोट पकड़ते हुए कहा।

'तरन तारन की एक टिकट।'

'पांच रूपये छुट्टे दो।'

'सोरी! छुट्टे तो नहीं हैं।'

लड़की ने अपना पर्स देखते हुए कहा।

'चलो रहने दो,फिर कभी ले लेंगें।'

कंडक्टर ने उस लड़की को बीस का नोट वापस करते हुए कहा।

-रमेश बग्गा चोहला

1348/17/1 गली नं:8 ग षि नगर एक्सटैनशन (लुधियाना)
मो. 9463132719